उपसंहार

उपसंहार

भारतीय संतों में कबीर का महत्वपूर्ण स्थान पाया जाता है। केवल संत के रूप में ही नहीं एक विचारक, समाजसुधारक तथा साहित्यकार के रूप मे भी कबीर हिंदी साहित्य में चर्चित हैं। उनके निड़र, निर्भय और बेपरवाह व्यक्तित्व से समसामाईक राजा और रंक भी प्रभावित थे। कबीर का व्यक्तित्व मध्ययुगीन भारत का एक सशक्त व्यक्तित्व था। उनके व्यक्तित्व से परवर्ती साहित्यकार भी प्रभावित रहे हैं। आधुनिक कथाकारों के साथ–साथ नाटककारों ने भी कबीर को विषय बनाकर अपनी रचनाएँ प्रस्तुत की हैं; जिनमें मणि मधुकर की 'इकतारे की आँख', भीष्म साहनी की 'कबिरा खड़ा बजार में', नरेंद्र मोहन की 'कहै कबीर सुनो भाई साधो' नामक कृतियाँ महत्वपूर्ण हैं। मणि मधुकर, भीष्म साहनी तथा नरेंद्र मोहन अल्पावधि में ही अपनी अलग पहचान बनानेवाले नाटककारों में से एक है। अपने साहित्यिक गुणवत्ता की वजह से हिंदी साहित्य जगत में इनका मौलिक योगदान पाया जाता है। मणि मधुकर, भीष्म साहनी तथा नरेंद्र मोहन यथार्थवादी नाटककार माने जाते हैं। भारत–पाकिस्तान के विभाजन की दिल दहला देनेवाली घटनाओं का प्रभाव इनके साहित्य पर पाया जाता है। इसी वजह से इनका साहित्य वास्तववादी लगता है। इन्होंने मध्ययुगीन प्रसिद्ध विद्रोही संत कबीर को माध्यम बनाकर अपने नाटकों की रचना की है।

बचपन से ही कबीर का जीवन संघर्षरत रहा है। विधवा ब्राह्मणी की संतान होने के कारण वे समाज के लोगोंद्वारा हमेशा प्रताड़ित होते रहे। जुलाहा जाति में पालन पोषण होने के कारण कबीर को उच्चवर्ग की प्रताड़ना का शिकार होना पड़ा। इसलिए वे आजीवन छुआछुत एवं ऊँच–नीच के भेदभाव के विरूद्ध संघर्ष करते हुए पाये जाते हैं। मानव धर्म को ही सर्वश्रेष्ठ स्थान देनेवाले कबीर के मतानुसार हर एक को आदमीयत का रास्ता अपनाना जरूरी है; आदमी का वर्ण के नाम पर बँटवारा

करना अत्यंत गलत है।

विवेच्य नाटकों में कबीर के व्यक्तित्व के बेपरवाही, क्षमाशीलता, निरक्षरता, निडरता आदी पहलू उभरकर सामने आते हैं। स्वभाव से बेपरवाह कबीर को खुद के दुःखों के बजाय दुनिया के दुःखों की जादा फिकर है। दया और करूणा से कबीर का मन ओतप्रोत भरा हुआ है। दुखियारों के प्रति कबीर को अपार स्नेह है। 'सच को सच' तथा 'झूठ को झूठ' कहने की निडर वृत्ति कबीर में ही पायी जाती है। क्षमाशीलता यह महत्वपूर्ण गुण आचरण में लाकर कबीर समाजसुधार का कार्य करते हैं। अनपढ़ कबीर पुस्तकीय ज्ञान को महत्व न देकर प्रेमस्वरूप बर्ताव को महत्व देते हुए दिखाई देते हैं।

विवेच्य नाटकों में कबीरयुगीन सामाजिक परिस्थिति दृष्टीगोचर होती है। प्रेम को भक्ति का दूसरा रूप मानने वाले कबीर जाति--पाति में बटे हुए समाज को एकसंध करने का कार्य करते हुए पाये जाते हैं। उच्चवर्गियोंद्वारा निम्नवर्गियोंपर होते जुल्म, अत्याचार का विरोध करनेवाले कबीर समाज के स्वार्थी, चालबाज व्यक्तियों से अपनी जान की परवाह किये बगैर दुश्मनी लेते है। समाज को पुरूष को स्त्री से महत्वपूर्ण स्थान मिलता हैं तथा स्त्री को पुरूष की दासी के रूप में देखा जाता है। इसलिए समाज के कुछ धनी लोग अनेक ब्याह करने के बावजुद भी अपनी कामवासना की पूर्ति के लिए अनेक रखेलियाँ रखते हैं। हरतरफ नारी का शोषण होता दिखाई देता है। नारी का सौंदर्य ही उसके विनाश का कारण बनता है। रैदास की पत्नी 'ज्यानकी' तथा नाटक की अभिनेत्री सुंदरता के कारण ही यौन अत्याचार की शिकार हो जाती है। छोटे लड़के का सर कलम कर देने के प्रसंग से अत्याचारी कोतवाल की संवेदनशून्यता का परिचय मिलता हैं।

कबीर पर आधारित नाटकों में सामाजिक के साथ--साथ धार्मिक परिस्थिति का भी

विवेचन किया गया है। कबीर ईश्वर के सगुण रूप का विरोध कर निर्गुण रूप को अपनाते हैं। तथा इसकी प्राप्ति के लिए प्रेममार्ग पर मार्गक्रमण करने की सलाह देते हैं। महंतों के धर्म के खिलाफ किये जाने वाले आचरण को संमाज के सामने लाकर कबीर उसका कड़ा विरोध करते हैं। धर्म के नाम पर जनता के अंधविश्वास का फायदा उठाकर अपनी जेब भरनेवाले कपटी साधुओं को कबीर कठोर शब्दों में फटकारते हैं। माला से जप कर मस्तक पर तिलक लगाकर तथा उपवास कर भगवान के प्रति श्रद्धा का नाटक करनेवाले साधुरूपी गुंडों की कबीर कटु आलोचना करते हैं। अपने स्वार्थ के लिए समाज के दो जाति तथा दो धर्मों के बीच दंगाफसाद करवानेवाले धर्म के ठेकेदार कबीर से बदला लेने के लिए उसके परिवार पर अत्यंत अन्याय करते हैं और कबीर के बेटे कमाल को बुरे संस्कारों के कीचड़ में नियोजन पूर्वक फँसाते हैं। कमाल की जिंदगी बरबाद कर कबीर से अपना बदला पूरा करते हैं। अजान, मंत्र–पठण द्वारा ईश्वर को जगाने की अंध आस्था का कबीर मजाक उड़ाते हैं। वह मानते है की, भगवान को जोरजोर से चिल्लाकर जगाने की आवश्यकता नहीं। मन ही मन में सच्ची भक्ति के सहारे हमें ईश्वर की कृपा प्राप्त हो सकती हैं। चराचर में विराजमान ईश्वर चींटी जैसे छोटे जीव की भी प्रार्थना का ध्यान रखता हैं।

विवेच्य नाटकों मे राजनीतिक परिस्थितियों का भी संदर्भ पाया जाता है। स्वार्थी राजनेता राजनीति का उपयोग अपने नीजी कार्य के लिए करते हुए पाये जाते हैं। चुनाव में किसी विशिष्ठ जाति, धर्म के वोट प्राप्त करने के लिए जानबुझ कर दो जाति तथा दो धर्मों मे सांप्रदायिक दंगों को भड़काकर अपना स्वार्थ साध्य करते हैं। भ्रष्टाचार को अपना आराध्य मानने वाले नेताओं को भ्रष्टाचार करने के लिए सरकार का हर डिपार्टमेंट अधुरा लगता है। राजनीति का अच्छा तथा बुरा असर समाज के युवावर्ग पर पाया जाता है। नेतागण अपना कार्य पूरा होने तक संमाज की युवापीढ़ी का पूरा इस्तेमाल करते हैं, मगर कार्य पूरा होते ही उन्हें नियोजनबद्ध शैली से अपने रास्ते से

हटा दिया जाता है। परिणामतः युवापीढ़ी दिशाहीन हो जाती है। नेतागणों की लोकप्रियता का उपयोग अपनी जेब भरने के लिए उनके चाटुककार करते हैं, वे नेताओं को, प्रशासकों को फुसलाकर तथा उनकी व्यर्थ सराहना कर अपनी पौ बारह करते हैं।

प्रशासक अपने अधिकार का दुरूपयोग कर सामान्य जनता पर अत्याचार करते हैं पंडित, मुल्ला आदि धर्म के ठेकेदारों की अधिकारी वर्ग (कोतवाल) से साठ–गांठ होने के कारण प्रजा को उनके दहशत में जीवन गुजारना पडता है। अपने अधिकारों का अयोग्य उपयोग कर नारी का शोषण किया जाता है। अय्याश प्रशासक, नेतागण प्रजा के उत्तरदायित्वों के प्रति उदासीन पाये जाते हैं। भ्रष्ट प्रशासक, नेतागण तथा न्याय व्यवस्था की सांठ–गांठ से न्याय व्यवस्था भी भ्रष्ट हो चुकी हैं। इस भ्रष्ट न्याय व्यवस्था में सामान्य जन पीस रहा है। उन्हें कहीं भी न्याय की प्राप्ति नहीं होती।

विवेच्य नाटकों की विषय वस्तुओं का आधार इतिहास है। तीनों नाटककारों ने अपने नाटकों में अपने समय की परिस्थितियों तथा परिवेश चित्रण कबीर युग के आधारपर किया हैं। विवेच्य नाटकों की कल्पना इतिहास से संबंधित पायी जाती हैं।

संदर्भ
ग्रंथ - सूची

संदर्भ ग्रंथ-सूची

आधार ग्रंथ –

अ.नं.	लेखक	ग्रंथ	प्रकाशक	संस्करण
1.	मणि मधुकर	इकतारे की आँख	सरस्वती विहार, जी.टी. रोड, शाहदरा, दिल्ली–32	प्रथम 1980
2.	भीष्म साहनी	कबिरा खड़ा बजार में	राजकमल प्रकाशन, 1–बी, नेताजी सुभाष मार्ग, नई दिल्ली–2	प्रथम 1981
3.	नरेंद्र मोहन	कहै कबीर सुनो भाई साधो	पराग प्रकाशन, 3/114, कर्ण गली, विश्वासनगर, शाहदरा, दिल्ली–32	प्रथम 1988

संदर्भ ग्रंथ –

अ.नं.	लेखक	ग्रंथ	प्रकाशक	संस्करण
1.	डॉ. नीलम राठी	साठोत्तर हिंदी नाटक	संमय प्रकाशन, सोमनाथ ढल, ए–2/703, प्रगति विहार, सोम बाजार, दिल्ली–110053	प्रथम 2001
2.	डॉ.शिवकुमार शर्मा एम. ए.	हिंदी साहित्य युग और प्रवृत्तियाँ	अशोक प्रकाशन, नई सडक, दिल्ली–6	1992
3.	डॉ. हजारीप्रसाद द्विवेदी	कबीर	राजकमल प्रकाशन. दिल्ली	1985
4.	रविंद्रकुमार सिंह	संतकाव्य की सामाजिक प्रासंगिकता	वाणी प्रकाशन, 21–ए, दरियागंज, नई दिल्ली–110002	

अ.नं.	लेखक	ग्रंथ	प्रकाशक	संस्करण
5.	डॉ. भीमराव पाटील	आठवे दशक की हिंदी कहानी में चेतना के विविध आयाम	ज्ञानदीप प्रकाशन, 'ज्ञानदीप', लक्ष्मी मंदिर के सामने, कुपवाड रोड, लक्ष्मीनगर, सांगली	प्रथम 2005
6.	आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी	हिंदी साहित्य क उद्भव और विकास	राजकमल प्रकाशन, दिल्ली.	1992
7.	रामचंद्र तिवारी	कबीर मीमांसा	लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद	1976
8.	डॉ. सुरैय्या शेख	नाटककार भीष्म साहनी	विनय प्रकाश, 3–ए–128 हंसपुरम्, कानपुर–21.	प्रथम 2006
9.	डॉ. शिवाजी देवरे	नाटककार नरेंद्र मोहन	शैलजा प्रकाशन, 57-P-II, कुंजविहार, यशोदानगर, कानपुर–208011.	2003

891.431
GHO
T15507